जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

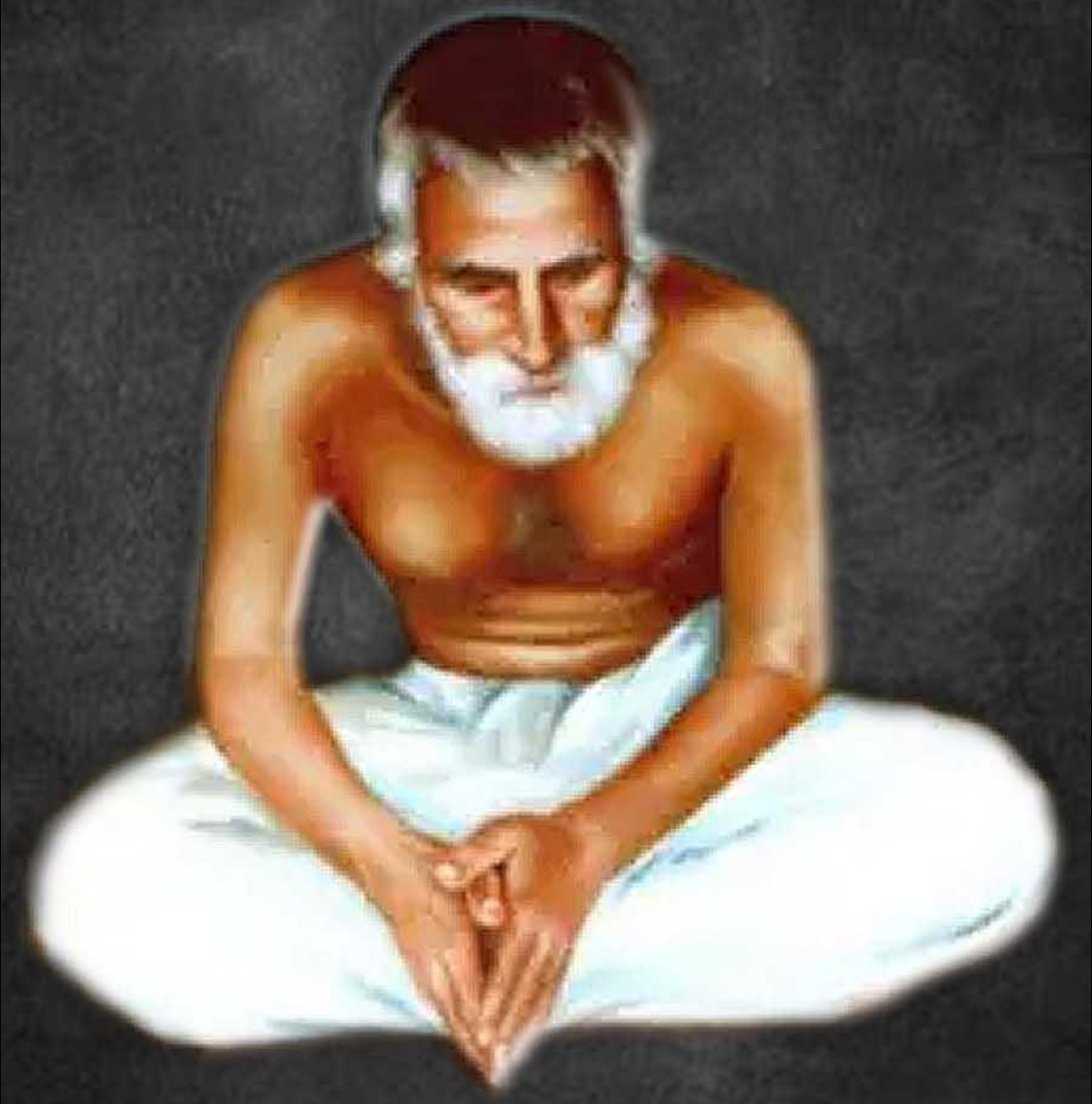

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

वैष्णवों की वंचना - लीला

श्रीलगुरुदेव

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जब बीमार होने का लीलाभिनय कर कोलकाता के 'भक्ति - भवन' में रह रहे थे, उस समय एक दिन एक जात गोस्वामी ॐ विष्णुपाद श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास जब आये तो परमहंस बाबाजी महाराज ने उक्त गोसांई की वंचना करने के लिए उसे कहा, — 'आप कोलकाता जाकर श्रीमद्

भक्तिविनोद ठाकुर को माथे पर रखकर माया के ब्रह्माण्ड कोलकाता से इस धाम में ले आइए । 'उक्त गोसांई जी लौकिक साधारण विचारानुसार, महाप्रभु जी के परममुक्त पार्षदों की क्रिया - मुद्रा (भाव भगिमा) को समझ नहीं पाये; वे इस तथ्य को नहीं जानते थे कि—

“तोमार (वैष्णवों का) हृदये सदा गोविन्द - विश्राम | "

आपके (वैष्णवों के) हृदय में सदैव भगवान गोविन्द वास करते हैं।

“यथाय वैष्णवगण, सेइ स्थाने

आनन्द

सेइ स्थान वृन्दावन, अशेष ।'

जहाँ पर महाभागवत वैष्णव होते हैं, वही स्थान वृन्दावन है, उसी स्थान पर असीम आनन्द है।

महाभागवत वैष्णव जिस किसी भी स्थान पर रहें, उस स्थान पर ही वे गोलोक के समस्त मंडल को अवतरण कराकर आठों प्रहर अपने अभीष्ट ब्रजनवयुवद्वन्द्व (श्रीराधा-कृष्ण युगल) की सेवा में

नियुक्त रहते हैं। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर की “जे दिन गृहे भजन देखि, गृहेते गोलोक भाय" (अर्थात् जिस दिन घर में भजन कीर्तन होता है, उस दिन घर साक्षात् गोलोक हो जाता है।) आदि उक्तियाँ अप्राकृत महाप्रभु के पार्षदों के बीच पूर्णरूप से प्रकाशित हुई हैं। जिसके स्थूल नेत्रों का भ्रान्त दर्शन दूर हो गया है अर्थात् जिसे दिव्य नेत्र प्राप्त हुए - हैं, वह ही इस आदर्श को प्रत्यक्ष रूप से देख सकता है।

उक्त जात गोसांई ने कोलकाता आकर श्रील भक्तिविनोद

ठाकुर को परमहंस गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज का श्रीधाम नवद्वीप में जाने का अनुरोध निवेदन किया। इसपर श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने बाबाजी महाराज को हरिभजन करने का आशीर्वाद प्रदान किया। महाभागवतों की क्रिया - मुद्रा को समझने में अक्षम, उक्त गोसांई को सारी बात विस्तारपूर्वक समझाते हुए श्रील प्रभुपाद ने कहा, — 'वैष्णवगण - हमारी दुष्ट - चित्तवृत्ति देखकर “ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्” (भ. गीता - 4 / 11) अर्थात् जो जिस प्रकार मुझे भजते हैं मैं उनको उसी प्रकार भजता हूँ इस

श्लोक के अनुसार विभिन्न प्रकार से हमारी वंचना करते हैं। हम वैष्णवों के पास जिस प्रकार की मनोवृति लेकर जाते हैं, उससे हमारा मंगल होना असंभव है— यह देखकर वे हमारी रुचि के अनुकूल विभिन्न बातें कहकर निर्विघ्न रूप से भगवद् भजन में निमग्न रहते हैं।

श्रील परमहंस गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास बहुत सारे विषयी व्यक्ति जिस प्रकार की रुचि लेकर जाते थे, उस प्रकार की बातें सुनकर ही वंचित होकर आ जाते थे। धान, चावल, तिल, सुपारी, आलू,

पटल की कहानी सुनकर बहुत लोग भजन की अपेक्षा अधिकतर विषयों में फंसने की तैयारी कर बैठते। भोग उन्मुख, कपटता - से भरी मनोवृति लेकर कभी भी साधु संग नहीं होता। साधु के प्रति पूर्ण शरणागत होने पर ही साधु सेवोन्मुख शरणागत व्यक्ति को अपना वास्तविक स्वरूप दिखाते हैं और माया से परे की एकान्त सत्य - कथा श्रवण कराते हैं।

श्रीलगुरुदेव